

---

## गीता के वक्ता कौन ???



शीर्षक को पढ़ते ही पाठक के मन में तुरन्त विचार उठेगा कि कितना सरल प्रश्न है, इस प्रश्न का उत्तर तो भारतवर्ष का बच्चा-बच्चा जानता है। कौन नहीं जानता कि गीता के वक्ता भगवान श्रीकृष्ण हैं? मूर्ख व्यक्ति के अतिरिक्त भारत में हर कोई जानता है कि गीता के वक्ता भगवान श्रीकृष्ण हैं। तथापि भारतवर्ष में संस्कृत की एक सूक्ति नित्य प्रति चरितार्थ होती रहती है – “शास्त्राण्यधीत्यपि भवन्ति मूर्खाः” अर्थात् कुछ लोग शास्त्र पढ़ने पर भी मूर्ख ही होते हैं। जनसामान्य में से

कोई यह कहे कि श्रीकृष्ण गीता के वक्ता नहीं अपितु कोई और है तो आश्चर्य नहीं होगा, परन्तु कोई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्ति या संस्था ये बात कहें तो अवश्य आश्चर्य व खेद का विषय है। वर्तमान समय में तथाकथित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त व्यक्तियों व संस्थाओं द्वारा इस बात को जोर-शोर से प्रचारित-प्रसारित किया जा रहा है कि श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता के वक्ता नहीं हैं, इनमें से कोई कह रहा है कि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण के अन्दर उपस्थित ‘निराकारब्रह्म’ ने दिया है, कोई कह रहा है कि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण के अन्दर उपस्थित ‘ज्योतिर्बिन्दु शिव’ ने दिया है तो कोई कह रहा है कि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण के अन्दर उपस्थित ‘काल’ ने दिया है। ऐसा कहकर अबोध जनसमुदाय को भ्रमित करने का व्यापक स्तर पर प्रयास किया जा रहा है। ये तथाकथित व्यक्ति व संस्था गीता के वक्ता होने का श्रेय भगवान श्रीकृष्ण से छीनने का दुस्साहस मात्र कर रहे हैं। ये सभी एकमत से ये तो स्वीकार करते हैं कि गीता ज्ञान एक उच्चकोटि का आध्यात्मिक ज्ञान है। परन्तु गीता के वक्ता होने को श्रेय श्रीकृष्ण



को देना नहीं चाहते। यद्यपि ये सभी अपने-अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये गीता ज्ञान का उपयोग कर रहे हैं ; तथापि ये तथाकथित गीता ज्ञाता गीता के वास्तविक वक्ता भगवान श्रीकृष्ण से असुरों की भाँति द्वेष करते हैं जिसके फलस्वरूप ये लोग श्रीकृष्ण को भगवान के पद से नीचे खींचकर उन्हें महापुरुष, श्रेष्ठ व्यक्ति अथवा सामान्य अवतार कहने में सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं । ये तथाकथित गीता ज्ञाता गीता पढ़कर भी उसे समझ नहीं पाते, इसलिये गीता के श्लोकों की कपोलकल्पित व्याख्या करते रहते हैं और शास्त्रों के तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत भी करते रहते हैं ; ऐसे गीता ज्ञाता मूर्ख के अतिरिक्त कुछ भी नहीं । ये तथाकथित गीता ज्ञाता श्रीकृष्ण से गीता के वक्ता होने का श्रेय इसलिये छीनना चाहते हैं क्योंकि गीताशास्त्र में बार – बार श्रीकृष्ण स्वयं को परम भगवान, परमेश्वर के रूप में घोषित करते हैं । आसुरी प्रवृत्ति के लोगों का ऐसा स्वभाव होता है कि वे श्रीकृष्ण को परमेश्वर-परमात्मा के रूप में स्वीकार करने से कतराते हैं। अतः ऐसी-ऐसी छलयुक्तियाँ खोजते रहते हैं , जिससे श्रीकृष्ण की परमभगवत्ता को चुनौती दी जा सके । परन्तु अल्पज्ञ आसुरी व्यक्ति ये भूल जाते हैं कि न केवल गीता – शास्त्र में अपितु अधिकाँश वेद-शास्त्रों में भी श्रीकृष्ण को परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया गया है । गीता शास्त्र जो बात सार रूप में कह रहा है , वही बात अन्यान्य वेद-शास्त्र विस्तार रूप में कहते हैं ; क्योंकि गीता समस्त वेद-शास्त्रों का सार है । यदि श्रीकृष्ण का शास्त्र सम्मत स्वरूप समझ में आ जाये तो इन तथाकथित गीता ज्ञाताओं की आसुरी विचारधारा स्वतः ही ध्वस्त हो जायेगी । अतः कुछ शास्त्र प्रमाणों से श्रीकृष्ण के स्वरूप का ज्ञान परमावश्यक है । गोपालतापनी उपनिषद् 1/01 में लिखा है

**सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायाविलष्टकारिणे ।**

**नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे ।।**

“ मैं सच्चिदानन्द रूप वाले श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ जो क्लेशों का हरण करने वाले हैं और मैं वेदान्त शास्त्र के वेद्य तत्त्व (परमात्मा) को प्रणाम करता हूँ जो सबकी बुद्धि के साक्षी और परमगुरु है ” ।





श्रीब्रह्म संहिता (5/1) का कथन है—

**ईश्वर : परमः कृष्णः सच्चिदानन्द विग्रहः ।  
अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम् ॥**

“श्रीकृष्ण परमेश्वर हैं और सच्चिदानन्द देह (अजर—अमर शरीर) वाले हैं। श्रीकृष्ण गोविन्द नाम से विख्यात स्वयं अनादि और सबके आदि हैं और समस्त कारणों के कारण हैं।”

बृहदविष्णु पुराण का कथन है —

**यो वेत्ति भौतिकं देहं कृष्णस्य परमात्मनः ।  
स सर्वस्माद् बहिष्कार्यः श्रौत स्मार्त विधानतः  
मुखं तस्यावलोक्यापि सचेलं स्नानं आचरेत् ।  
पश्येत्सूर्यस्पृशेद्गाञ्च घृतं प्राश्यः विशुध्यति ॥**

“श्रीकृष्ण साक्षात् परमात्मा हैं और जो व्यक्ति उनके सच्चिदानन्द दिव्य शरीर को मनुष्यवत् पाँचभौतिक नश्वर समझता है उसे श्रुति—स्मृति के समस्त विधानों से बहिष्कृत कर देना चाहिये । श्रीकृष्ण के शरीर को मरणशील नश्वर मानना इतना बड़ा महापाप है कि यदि ऐसी मान्यता वाले व्यक्ति का दर्शन हो जाये तो वस्त्र सहित स्नान करना चाहिये और शुद्धि के लिये सूर्यदर्शन, गोस्पर्श और गोघृत पान करना चाहिये । ताकि महापातक न लगे ।”

विष्णुपुराण 4.11.2 में लिखा है —

**यदोर्वशं नरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ।  
यत्रावतीर्णं कृष्णाख्यं परम् ब्रह्म नराकृति ॥**

“श्रीकृष्ण नामक नराकृति परमब्रह्म (परमभगवान) जहाँ अवतरित हुए हैं, उस यदुवंश के कथा प्रसंग को सुनकर मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं।”



ब्रह्माण्ड पुराण का कथन है —

नन्दव्रजजनानन्दी सच्चिदानन्द विग्रहः ।  
नवनीतविलिप्तांगो नवनीतनटोऽनघ ॥

“श्री नन्दव्रजजनों को आनन्द देने वाले श्रीकृष्ण सच्चिदानन्द स्वरूप हैं और उनके अंग नवनीत से लिप्त रहते हैं एवं वे मायातीत श्रीकृष्ण नवनीत के निमित्त गोपियों के समक्ष नृत्य करते हैं ।”

पद्मपुराण के निर्माण खण्ड में लिखा है :-

दृष्ट्वातिहृष्टो ह्यभवं सर्वभूषणभूषणम् ।  
गोपालमबलासंगे मुदितं वेणुवादिनम् ॥

ततो मामाह भगवान् वृन्दावनचरः स्मयन् ।  
यदिदं मे त्वया दृष्टंरूपं दिव्यं सनातनम् ॥

निष्कलं निष्क्रिय शान्तं सच्चिदानन्दविग्रहम् ।  
पूर्ण पद्मपलाशाक्षं नातः परतरं मम् ।  
इदमेव वदन्त्येते वेदाः कारणकारणम् ॥

“श्री वेदव्यास जी ने कहा कि वेणु बजाते हुए, ब्रजगोपियों के साथ मुदित, सर्वभूषणों के भूषणस्वरूप गोपाल का दर्शन कर मैं अति प्रसन्न हुआ । उसके पश्चात् वृन्दावन विहारी भगवान् श्रीकृष्ण ने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा तुमने मेरे जिस रूप का दर्शन किया है , यह मेरा दिव्य सनातन रूप है । यह रूप निष्कल (अखण्ड) निष्क्रिय (भौतिक क्रियाओं से रहित) , शान्त व सच्चिदानन्द स्वरूप है । यह रूप पूर्ण है कमल जैसे नयनों वाला है और इससे श्रेष्ठ मेरा और कोई रूप नहीं है । मेरा यही रूप सर्वकारणों का कारण है समस्त वेद ऐसा कहते हैं ।”



श्रीमद्भागवत 1.3.28 में लिखा है —

**“एते चांशकला : पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं ”**

“यहां पर वर्णित समस्त अवतार श्रीविष्णु के अंशावतार हैं या फिर कलावतार हैं परन्तु श्रीकृष्ण श्रीविष्णु के अवतार नहीं हैं वे तो स्वयं भगवान् (मूल भगवान्) हैं।”

श्रीमद्भागवत में आगे भी 10.14.32 में लिखा है —

**अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोप ब्रजौकसाम् ।  
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥**

“श्री ब्रह्मा जी कहते हैं अहो! इन श्रीनन्द गोप आदि ब्रजवासियों का कैसा परम सौभाग्य है कि स्वयं परमानन्दस्वरूप पूर्ण ब्रह्म श्री कृष्ण इनके सनातन मित्र है।”

श्रीमहाभारत शास्त्र का कथन है —

**सर्वे वेदाः सर्वविद्याः सर्वशास्त्राः, सर्वयज्ञाः सर्वईड्यश्च कृष्णः ।  
विदुः कृष्णं ब्राह्मणास्तत्त्वतो ये, तेषां राजन् सर्वयज्ञाः समाप्ताः ॥**

“समस्त वेद, समस्त विद्या, समस्त शास्त्र व समस्त यज्ञ जिनका प्रतिपादन करते हैं, वह है सर्वपूज्य श्रीकृष्ण। हे राजन्! जो ब्राह्मण श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानते हैं, उनके समस्त यज्ञ पूर्ण हो गये हैं अर्थात् उनको कृष्णतत्त्व ज्ञान होने से अपने यज्ञों का फल मिल चुका है।”

गौतमीय तन्त्र का कथन है —

**कृषिर्भूवाचको शब्दोणश्च निर्वृत्तिवाचकः ।  
तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते ॥**

“कृष् का अर्थ है परमसत्ता और ण का अर्थ परमानन्द। इन दोनों (कृष् व ण) को एक करने पर कृष्ण बनता है, अतः कृष्ण परमब्रह्म हैं।”



उपर्युक्त शास्त्र कथनों से सुस्पष्ट है कि श्रीकृष्ण परम भगवान, परमब्रह्म, परमात्मा व परमेश्वर है और उनका स्वरूप सच्चिदानन्दघन मूर्ति है। जो परमेश्वर होता है वह काल व माया सहित समस्त देवी-देवों का परमस्वामी होता है। परमेश्वर से निकलने वाला तेज पुञ्ज कोटि-कोटि सूर्यों से भी बढ़कर व सुशीतल दिव्य सुखमय होता है और निराकार ब्रह्म के नाम से उपनिषदों में विख्यात है। माया परमेश्वर की बाह्य शक्ति है और काल परमबलवान विभूति। परमेश्वर की विभूतियाँ असंख्य हैं, जिनमें काल सर्वविध्वंसक है। श्री शिव भी परमेश्वर की एक विभूति विशेष है, जो उन्हीं की भक्ति में नित्य रत रहते हैं। समस्त वेद-शास्त्रों ने श्रीकृष्ण को ही परमब्रह्म परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया है और गीताशास्त्र भी सर्वशास्त्रों का सार होने से श्रीकृष्ण को ही परमब्रह्म परमेश्वर के रूप में घोषित करता है।

अल्पज्ञ आसुरी व्यक्ति सर्वशास्त्रों का निष्कर्ष जाने बिना ही गीताशास्त्र के प्रतिपाद्य विषय के साथ छेड़छाड़ करते हैं। गीता पढ़कर उनको लगता है कि शेष समस्त विचार तो गीताशास्त्र में ठीक हैं, परन्तु एक ही विचार ऐसा है, जो गले नहीं उतरता और वह विचार है श्रीकृष्ण का स्वमुख से अपनी महिमामण्डन करना, स्वयं को बारम्बार परमेश्वर के रूप में घोषित करना। श्रीकृष्ण के दिव्यकार्यकलापों (लीलाओं) के रहस्य को समझने में असमर्थ तथाकथित गीता ज्ञाता श्रीकृष्ण के लीलाचरित्रों और उनके उपदेश में सामञ्जस्य स्थापित नहीं कर पाते और अन्ततः इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि श्रीकृष्ण गीता के वक्ता नहीं हो सकते, अवश्य ही श्रीकृष्ण के शरीर में किसी अदृश्य शक्ति ने प्रवेश किया होगा और गीता ज्ञान सुनाया होगा। ऐसी मनोकल्पना वही कर सकता है, जो या तो श्री कृष्ण की परमभगवत्ता से द्वेष करता है और या फिर श्रीकृष्ण भक्ति शून्य होने से उनकी लीलाचरित्रों को समझने में असमर्थ है। जो व्यक्ति कृष्णतत्त्ववेत्ता भक्त की शरणागति में रहकर श्रीकृष्ण भक्ति का अभ्यास नहीं करता और उनसे कृष्णविषयक ज्ञान ग्रहण नहीं करता, उसके लिए गीता के रहस्य को समझ पाना नितान्त असम्भव है। श्रीकृष्ण गीता के प्रतिपाद्य विषय है, अतः गीता शास्त्र का एकमात्र उद्देश्य है श्रीकृष्ण की परमभगवत्ता को स्थापित करके श्रीकृष्ण भक्ति में



मानव समाज को संलग्न करना। दिग्भ्रमित तथाकथित गीता ज्ञाता गीता के इस चरम उद्देश्य से जिज्ञासुओं को विमुख करने के लिए छलयुक्तियों का आश्रय लेते हैं और गीता के वक्ता होने का श्रेय श्रीकृष्ण से छीनने का दुस्साहस करते हैं। अब इन तथाकथित गीता ज्ञाताओं की दूषित विचारधारा का क्रमानुसार युक्तियुक्त खण्डन किया जायेगा, पाठक सचेत होकर पढ़ें—

## प्रथम दूषित विचारधारा

### (गीता के वक्ता निराकार ब्रह्म है)

उपनिषदों में परमेश्वर को मुख्यतः ब्रह्म शब्द से सूचित किया गया है। उपनिषद या वेदान्त ब्रह्म का निरूपण गोपनीय ढंग से करता है, जिसे पढ़कर पाठक वेदान्त प्रतिपाद्य ब्रह्म को निराकार मानने की भूल कर बैठता है। यथार्थतः ब्रह्म निराकार नहीं है अपितु साकार है। परन्तु ब्रह्म की साकारता जड़ नहीं है, जिस तरह मनुष्यों व देवादि की साकारता जड़ पाँचभौतिक है। ब्रह्म की साकारता चिन्मय सच्चिदानन्द है। अतः वेदान्त प्रतिपाद्य ब्रह्म सच्चिदानन्द साकार रूप हैं, जो कि सर्वशक्तियों व सर्वदिव्य गुणों का आगार है। सच्चिदानन्द साकार ब्रह्म अचिन्त्य महाशक्ति के प्रभाव से सर्वव्यापक व विभु होकर भी नराकृतिवत् सच्चिदानन्द साकार रूप में दिखता है और दिव्य साकार रूप में रहते हुए भी सर्वव्यापक होता है। सच्चिदानन्द साकार ब्रह्म ही अखिल अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों का स्रोत और परव्योम में स्थित असंख्य भगवत्लोकों का नियन्ता भी है।

वेदान्तानुसार सच्चिदानन्द साकार ब्रह्म के दिव्य शरीर से कोटि—कोटि सूर्यों की ज्योति के समान एक शान्त—सुशीतल—सुखमय दिव्य प्रकाश निकलता रहता है; वह दिव्य प्रकाश निराकार ब्रह्म कहलाता है। कुछ अल्पज्ञ वेदान्ती इस निराकार ब्रह्म को ही वेदान्त प्रतिपाद्य समझ बैठते हैं और घोषणा कर देते हैं कि परमात्मा या ब्रह्म रूपाकृति से रहित, गुणों से रहित एक निराकार ज्योति है। निराकार ब्रह्म की सत्ता तो वास्तविक है और वेदान्तवर्णित भी है, परन्तु निराकार ब्रह्म की सत्ता सर्वोच्च नहीं और स्वतंत्र भी नहीं। जिस तरह सूर्यप्रकाश सूर्यलोक से उत्पन्न है



और सूर्य लोक पर आश्रित भी, उसी तरह निराकार ब्रह्म भी साकार ब्रह्म से अनादि प्रकट है और साकार ब्रह्म पर ही आश्रित भी है। यही वेद—वेदान्त का अभिमत भी है।

ईशोपनिषद् मन्त्र 15 में भक्त प्रार्थना करता है—

**हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।  
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥**

“हे पालक परमेश्वर! आपका मुखमण्डल आपके चमचमाते सुनहरे तेज से ढका हुआ है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस तेज पुञ्ज रूपी आवरण को हटा लीजिये, क्योंकि यह आवरण आपके चिन्मय साकार रूप के दर्शन में बाधक बन रहा है। अतः हे परमेश्वर! अपने भक्त को अपना दर्शन दीजिए।”

अतः उपनिषद् का प्रतिपाद्य साकार ब्रह्म है, निराकार ब्रह्म नहीं। फिर भी कुछ तथाकथित वेदान्तवादी निराकार ब्रह्म को ही सर्वोच्च मानते हैं और जब वे गीताशास्त्र पढ़ते हैं तो उसमें श्रीकृष्ण का परिचय सर्वोच्च सत्ता के रूप में पाते हैं। श्रीकृष्ण के लीला चरित्रों को समझने में अक्षम ऐसे वेदान्तवादी श्रीकृष्ण को साकार ब्रह्म या परमेश्वर रूप में स्वीकार नहीं कर पाते।

वे श्रीकृष्ण को पाँचभौतिक जड़देहधारी पुरुष के रूप में देखते हैं और मानते हैं कि श्रीकृष्ण तो जन्मने—मरने वाला नश्वर रूप है, किन्तु इस नश्वर रूप में निराकार ही अवतरित हुआ है। निराकार ब्रह्म ने ही माया द्वारा अपने लिए श्रीकृष्ण का नश्वर रूप रचा है और इस श्रीकृष्ण के नश्वर रूप के माध्यम से निराकार ब्रह्म ने ही गीता ज्ञान प्रदान किया है। अतः सोचते हैं कि गीता में वर्णित सर्वोच्च सत्ता श्रीकृष्ण नामक नश्वर रूप की नहीं, अपितु उसमें उपस्थित निराकार ब्रह्म की है। वे नहीं जानते कि साकार ब्रह्म श्रीकृष्ण को नश्वर देहधारी समझना महाअपराध है; परन्तु श्रीकृष्ण के रूप को मायानिर्मित समझने वाले मायावादी ये अपराध बारम्बार करते रहते हैं। जड़—नश्वर शरीर की जननी तो माया है और ये माया सच्चिदानन्द साकार ब्रह्म श्रीकृष्ण को स्पर्श भी नहीं कर सकती, जैसा कि श्रीमद्भागवत (10.88.5) में कथित है—





हरिर्हि निर्गुणः साक्षात् पुरुषः प्रकृते परः ।  
स सर्वदृगुपद्रष्टा तं भजन् निर्गुणो भवेत् ॥



“श्री हरि (श्रीकृष्ण) ही साक्षात् निर्गुण पुरुष अर्थात् माया के तीन गुणों से रहित पुरुष है और माया (प्रकृति) से परे है। वही सर्वसाक्षी है, जो उनका ही भजन करते हैं, वे भी निर्गुण हो जाते हैं।”

अतः निष्कर्ष निकलता है कि श्रीकृष्ण का रूप मायानिर्मित नश्वर पाँचभौतिक रूप नहीं है, जो निराकार ब्रह्म ने अपने लिए निर्मित किया हो अपितु श्रीकृष्ण तो सच्चिदानन्द साकार ब्रह्म हैं, निराकार ब्रह्म तो उनसे निर्गत ज्योतिमात्र है। निराकार ब्रह्म तो साकार ब्रह्म

श्रीकृष्ण से निकलता है, उनमें प्रवेश नहीं करता। जो तथाकथित गीताज्ञाता ऐसा कहते हैं कि निराकार ब्रह्म ने श्रीकृष्ण में प्रवेश करके गीता उपदेश किया है, वे सभी पथभ्रष्ट-ज्ञानभ्रष्ट हैं; उनकी दूषित विचारधारा में नहीं फँसना चाहिये। वस्तुतः श्रीकृष्ण ही गीता के वास्तविक वक्ता हैं।

## द्वितीय दूषित विचारधारा

(गीता के वक्ता ज्योतिबिन्दु शिव है)

इस विचारधारा के अनुसार शिव ही परमेश्वर हैं और वही स्वयं को सर्वोच्च सत्ता के रूप में घोषित कर सकते हैं, अन्य कोई नहीं। अतः गीता उपदेश शिव ने



किया है। दुर्भाग्य की बात यह है कि ये शिव वेद-शास्त्र सम्मत शिव नहीं है, अपितु स्वकपोलकल्पित शिव है; जोकि न तो सदाशिव की भांति पंचमुखी, न शिवलिंग की आकृति वाले ज्योतिर्लिंग शम्भु हैं और न ही नराकृति रूद्रदेव या शंकर जी हैं। ये स्वकपोलकल्पित शिव प्रकाश का एक बिन्दु मात्र है। जरा सोचिये क्या प्रकाश का एक बिन्दु गीता का वक्ता हो सकता है? गीताशास्त्र (11/12) में श्री संजय जी कहते हैं—

**दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेत् युगपदुत्थिता ।**

**यदि भाः सदृशी सा स्यात् भासस्तस्य महात्मनः ॥**

“यदि हजार सूर्यों की ज्योति एक साथ आकाश में उदित हो, तो कदाचित् वह ज्योति विराट पुरुष परमात्मा की ज्योति के समान हो सकती है।”

गीता के वक्ता से हजार सूर्यों की ज्योति निकल रही है, अतः गीता का वक्ता ज्योतिसिन्धु है, ज्योति बिन्दु नहीं। समस्त शास्त्रों का अभिमत है कि परमेश्वर श्रीकृष्ण ज्योतिसिन्धु हैं और वह ज्योति निराकार ब्रह्म के नाम से विख्यात हैं अतः तथाकथित गीता ज्ञाताओं के गीता वक्ता ज्योतिबिन्दु शिव का लक्षण गीता के इस श्लोक में वर्णित ज्योति लक्षण से मेल नहीं खा रहा है। श्रीकृष्ण जो ज्योतिसिन्धु हैं क्या उनमें किसी ज्योतिबिन्दु के प्रवेश करने की सम्भावना हो सकती है? यदि है तो जैसे सूर्य-ज्योतिसिन्धु में जुगनु-ज्योति बिन्दु मिलकर अपनी पहचान और प्रभाव को खो देता है, और चन्द्रज्योति सिन्धु के समक्ष जैसे तारा ज्योतिबिन्दु अपना प्रभाव खो देता है, वैसे ही ज्योतिबिन्दु शिव भी ज्योतिसिन्धु श्रीकृष्ण के निकट जाते ही अपना प्रभाव खो देगा। वेद शास्त्र सम्मत शिव तो फिर भी गीता वक्ता श्रीकृष्ण के सान्निध्य में जाकर अपना प्रभाव नहीं खोंयेंगे, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार वे श्रीहरि-श्रीकृष्ण के परम भक्त हैं और भक्त भगवान में घनिष्ठ प्रेम सम्बंध होता है। श्रीमद्भागवत (10/63/43) में श्रीशिवजी श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए कहते हैं—

**अहं ब्रह्माथ विबुधा मुनयश्चामलाशयाः ।**

**सर्वात्मना प्रपन्नास्त्वामात्मानं प्रेष्ठमीश्वरम् ॥**





“मैंने, ब्रह्माजी ने, देवगणों ने और निर्मल हृदय मुनिगणों ने सब प्रकार से आपकी शरण ग्रहण कर रखी है, क्योंकि आप हमारे प्रिय परमेश्वर हो।”

अतः श्री शिवजी तो श्रीकृष्ण के शरणागत भक्त हैं, वे तो श्रीकृष्ण मुखारविन्द से गीता श्रवण में रुचि रखते हैं, वे कदापि गीता शास्त्र के वक्ता नहीं हो सकते। तथाकथित गीता ज्ञाताओं के ज्योतिबिन्दु शिव का शास्त्रों के अनुसार कोई अस्तित्व ही नहीं है और यदि मान भी लिया जाए कि अस्तित्व है, तो वो अस्तित्व बिन्दु रूप होने से सिन्धुरूप श्रीकृष्ण की तुलना में नगण्य ही रहेगा। अतः ज्योतिसिंधु श्रीकृष्ण में ज्योतिबिन्दु काल्पनिक शिव ने प्रवेश करके गीता ज्ञान दिया— यह विचार पूर्णतः भ्रामक और छलमात्र है, गीता के वक्ता तो श्रीकृष्ण ही हैं।

## तृतीय दूषित विचारधारा

### (गीता के वक्ता काल पुरुष है)

इस विचारधारा के अनुसार श्रीकृष्ण की देह में कालपुरुष ने प्रवेश करके गीता उपदेश किया है। यदि श्रीकृष्ण के शास्त्र सम्मत सच्चिदानन्द स्वरूप का ज्ञान समझ में आ जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि श्रीकृष्ण अजर—अमर—अविनाशी—सर्वशक्तिमान व सर्वगुणसम्पन्न है, जोकि सर्वोच्च लोक श्री गोलोक वृन्दावन में नित्य विराजते है। जैसे श्रीकृष्ण अविनाशी है, वैसे ही उनका परमधाम गोलोक वृन्दावन भी अविनाशी है। अविनाशी का अर्थ होता है, जिसका विनाश या मृत्यु सम्भव ही नहीं। विनाश केवल नश्वर देह का हुआ करता है, किन्तु श्रीकृष्ण की देह सच्चिदानन्द है अर्थात् सत्—सनातन चित्—सर्वज्ञ, आनन्द— दिव्य आनन्दमय है; भूमि—जल—अग्नि—वायु—आकाश से युक्त पाँचभौतिक नहीं। परमेश्वर श्रीकृष्ण के विषय में संसारी देहधारी वाला देह—देही विभाग लागू नहीं हो सकता अर्थात् जिस तरह संसारी मनुष्य का शरीर नश्वर और आत्मा अविनाशी होता है, उस तरह भगवान श्रीकृष्ण के विषय में नहीं सोचना चाहिये। श्रीकृष्ण का शरीर और आत्मा दोनों एक ही अविनाशी तत्त्व है, उनके शरीर में



अलग से आत्मा नहीं होती अपितु उनका शरीर ही उनकी आत्मा है । कूर्म पुराण का कथन है —

**“ देह—देहि विभागश्च नेश्वरे विद्यते क्वचित् ।”**

“परमेश्वर के शरीर में आत्मा नहीं होती, क्योंकि उनका शरीर ही उनकी आत्मा है ।” यही कारण है कि श्रीकृष्ण के लिये देहत्याग असम्भव है और वे देहसहित ही अपने परमधाम गोलोक वृन्दावन वापस चले गये , जहाँ से वे सशरीर आये थे ।

श्रीमद्भागवत 11.31.6 में श्रीशुकदेव जी कहते हैं—

**लोकाभिरामां स्वतनुं धारणाध्यानमंगलम् ।**

**योगधारणया आग्नेय्या अदग्धवा धामाविशत्स्वकम् ॥**

“समस्त संसार के लिये अत्यन्त आकर्षक, और धारणा व ध्यान किये जाने पर मंगल करने वाला श्रीकृष्ण का दिव्यशरीर उनके निजधाम में प्रवेश कर गया ; सिद्ध योगी जिस तरह योगधारणा से उत्पन्न अग्नि द्वारा अपने शरीर को जला देते हैं, उस तरह श्रीकृष्ण देह का दग्ध होना असम्भव है अर्थात् श्रीकृष्ण सशरीर अपने परमधाम गये ।”

श्रीकृष्ण का गोलोक वृन्दावन नामक परमधाम भी कालकृत महाप्रलय में विनष्ट नहीं होता । श्रीमद्भागवत 2.9.10 में श्री ब्रह्मा जी परमधाम का वर्णन करते हुए कहते हैं :—

**प्रवर्तते यत्र रजस्तमस्तयोः सत्त्वं च मिश्रं न च कालविक्रमः ।**

**न यत्र माया किमुतापरे हरेरनुव्रता यत्र सुरासुरार्चिताः ॥**

“परमधाम में रजोगुण, तमोगुण व इन दोनों से मिश्रित सतोगुण नहीं है । वहाँ पर काल का पराक्रम या विनाशशीलता भी नहीं है । वहाँ पर जब माया का ही प्रवेश नहीं तो फिर मायाजन्य कामक्रोधादि विकार व पाँच भौतिक पदार्थों का होना ही



असम्भव है। वहाँ पर तो देवताओं व असुरों दोनों ही द्वारा पूजित भगवान के पार्षद रहते हैं।”

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण और उनका लोक दोनों ही अविनाशी और काल के स्पर्श से रहित है। श्रीकृष्ण के दिव्य शरीर में सर्वविनाशक काल का प्रवेश करना और गीताउपदेश करना शास्त्र विरुद्ध और मनगढ़न्त विचार है। काल भी स्वतन्त्र नहीं है, यह श्रीकृष्ण की सबसे शक्तिशाली विभूति है, इसलिये श्रीकृष्ण के अधीन उनकी एक विशेष शक्ति मात्र है। श्रीकृष्ण की विभूति श्रीकृष्ण से अधिक बलवान नहीं हो सकती। इसलिये काल श्रीकृष्ण के दिव्य शरीर में प्रवेश करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। गीताशास्त्र में स्वयं श्रीकृष्ण ने 10वें अध्याय में दो बार कहा है कि काल मेरी विभूति है।

**“कालः कलयतामहम्” (गीता-10.30)**

“विनाशकर्ताओं में मैं काल हूँ अर्थात् काल मेरी सर्वसंहारक विभूति है।”

**“अहमेवाक्षयः कालो” (गीता -10.33)**

“मैं अक्षय या शाश्वत काल हूँ अर्थात् काल मेरी शाश्वत विभूति है।”

जैसे श्रीकृष्ण ने अपने आप को काल कहा है, वैसे ही उन्होंने इसी दशम् अध्याय में अपने आप को विष्णु – सूर्य – मरीचि – चन्द्रमा – सामवेद – इन्द्र – मन – चेतना – शंकर – कुबेर – अग्नि – सुमेरु पर्वत – बृहस्पति – कार्तिकेय – समुद्र – भृगु – ओंकार – जपयज्ञ – हिमालय पर्वत – अश्वत्थ वृक्ष – देवर्षिनारद – चित्ररथ गन्धर्व – कपिलमुनि – उच्चैःश्रवा घोड़ा – ऐरावत हाथी – राजा – वज्र – कामधेनू – कामदेव – वासुकिसर्प – अनन्तशेषनाग – वरुणदेव – अर्यमा – यमराज – प्रह्लाद – सिंह – गरुड़ – वायु – श्रीराम – मगरमच्छ – गंगा – अध्यात्मविद्या – अकार – द्वंद्वसमास – ब्रह्मा – मृत्यु – कीर्ति – श्री – वाक् – स्मृति – मेधा – दृढता – क्षमा – बृहत्साम – गायत्रीछन्द – मार्गशीर्षमास – वसन्तऋतु – जुआ – तेज – जय – साहस – बल – बलराम – धनञ्जय –



महर्षि व्यास – शुक्राचार्य – दण्ड – नीति – मौन और ज्ञान भी कहा है। तो क्या ये सभी 70 व्यक्ति या वस्तुएँ श्रीकृष्ण के शरीर में प्रवेश करके बोल रहे थे? यदि नहीं तो फिर श्रीकृष्ण ने इन सबका परिचय स्वयं से क्यों दिया? अर्थात् ऐसा क्यों बोला कि मैं ही ये सब हूँ? ऐसा इसलिये बोला कि दशम अध्याय में श्लोक 20 से लेकर 38 तक जो-जो बोला है, वह सब श्रीकृष्ण की विभूतियाँ हैं अर्थात् श्रीकृष्ण की शक्तियाँ ही न्यूनाधिक रूप में इन सबमें कार्य कर रही है। श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं—





नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप ।

एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरः मया ॥ (गीता 10-40)

“हे शत्रुविजेता । मेरी दैवी विभूतियों का कोई अन्त नहीं है , मेरे द्वारा वर्णित ये सभी विभूतियाँ तो संक्षेप में कही गयी हैं ।”

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्व श्रीमदूर्जितमेव वा ।

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोऽंशसंभवम् ॥ (गीता-10.41)

“जो-जो भी ऐश्वर्ययुक्त, सौन्दर्ययुक्त या सम्पत्तियुक्त और शक्ति प्रभावादि युक्त सत्ताएँ हैं, उन सबको तुम मेरे तेज या शक्ति के अंश से उत्पन्न जानो ।” अतः इस विभूतियोग नामक अध्याय में श्रीकृष्ण ने काल सहित अन्य सभी सत्ताओं को अपनी विभूतियों में गिनाया है और ये सभी विभूतियाँ सम्पूर्ण नहीं अपितु संकेत मात्र है तथा श्रीकृष्ण की शक्ति के अंशमात्र से प्रकट या उत्पन्न हैं । इन सभी विभूतियों को श्रीकृष्ण ग्यारहवें अध्याय में अपने विश्वरूप में अर्जुन को दिव्य दृष्टि देकर साक्षात् दर्शन भी कराते हैं । विश्वरूप में अर्जुन असंख्य मुख-भुजाएँ-अस्त्र-शस्त्र आदि का दर्शन करता है, जो सभी श्रीकृष्ण की विभूतियाँ थी । विश्वरूप को देखकर भयभीत अर्जुन पूछता है—हे असीम शक्ति आप कौन हैं? तब श्रीकृष्ण के एक अंशमात्र द्वारा दर्शित विश्वरूप उत्तर देता है—

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान् समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।

(गीता-11.32)

“मैं लोकों का नाश करने वाला विकराल काल हूँ और लोकों का संहार करने के लिए ही अभी प्रवृत्त हुआ हूँ ।”

गीता शास्त्र में ये तीसरी बार बोला है कि मैं काल हूँ । दशवें अध्याय में दो बार ये बोल कर कि मैं काल हूँ फिर अन्त में कह दिया काल सहित अन्य सभी मेरी विभूतियाँ है । अब ग्यारहवें अध्याय के 32वें श्लोक में फिर बोल दिया कि मैं काल



हूँ ; तो यहाँ भी काल श्रीकृष्ण की विभूति मात्र ही समझी जायेगी। श्रीकृष्ण से अधिक बलवान नहीं हो सकती उनकी विभूति। भगवान श्रीकृष्ण जब भी कोई संहार कराते हैं, तो वो काल के द्वारा ही कराते हैं। यह काल उनसे स्वतन्त्र नहीं अपितु उन्हीं के नियन्त्रण में रहता है। अतः काल गीता का वक्ता नहीं स्वयं परमेश्वर श्रीकृष्ण ही गीता के वक्ता है। यदि कोई यह सोचे कि श्रीकृष्ण ने युद्धक्षेत्र में ही क्यों कहा कि मैं काल हूँ, युद्ध के बाद फिर कभी क्यों नहीं कहा? वस्तुतः श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र युद्ध के बहुत समय बाद भी परमधाम जाने से पूर्व श्री उद्धव जी को भागवत का दिव्य ज्ञान प्रदान करते समय भी कहा है कि मैं काल हूँ। और जिस अध्याय में कहा उसका नाम भी विभूतियोग है। वहाँ भी श्रीकृष्ण ने अपनी विभूतियों का विस्तृत वर्णन किया है। श्रीकृष्ण ने कहा—हे उद्धव!

**“कालः कलयतामहम्” (11.16.10)**

“अर्थात् विनाशकर्ताओं में मैं काल हूँ।” अतः स्पष्ट है कि काल श्रीकृष्ण के अधीन उनकी एक असीम शक्तिशाली विभूति है; जो सर्वसंहारक है, किन्तु श्रीकृष्ण और उनके परमधाम का संहार नहीं कर सकती। अतः जो काल श्रीकृष्ण का आज्ञाकारी दास है, वह श्रीकृष्ण के शरीर में प्रवेश करने का दुस्साहस कैसे कर सकता है? इसलिये निश्चय करके संशयरहित होकर जान लीजिये गीता के वक्ता भगवान श्रीकृष्ण हैं।